Ch-8

नमक का दारोगा

मौखिक

(1) इस पाठ में कौन-कौन से व्यक्तित्व उभर कर आए हैं ?

उ० इस पाठ में जो व्यक्तित्व उभर कर आए हैं वो पंडित आलोपीदीन दारोगा वंशीधर और उनके पिता मुंशी जी है।

(2) वंशीधर ने अफसरों का मन कैसे मोह लिया ?

उ० वंशीधर ने अफसरों का मन अपनी कार्यकुशलता और उत्तम आचार से मोह लिया।

(3) ~~कुइयों~~ गाड़ियों में क्या था और

उन्हें कहाँ ले जाया जा रहा था ?

उ० गाड़ियों में नमक के बोरियाँ थी उन्हें कार से ले जा रहा था।

(4) पंडित आलोपीदीन सच्चे पारखी थे। तथ्य की पुष्टि के लिए अपने मित्रों के साथ बातचीत कीजिए।

उ० दारोगा वंशीधर को पंडित आलोपीदीन ने काफी लालच दी ताकि वह मामला रफा-दफा कर दे, किंतु दारोगा वंशीधर अड़िग रहे। न्यायालय में हार जाने पर भी उन्होंने आलोपीदीन के आगे घुटने नहीं टेके। उनके इस कर्तव्यपरायण और धर्मनिष्ठ रूप के आगे पंडित जी ठहर न सके। वे इस बात को समझ गए कि वंशीधर जैसे मनुष्यों का मिलना कठिन है। इस कारण उन्होंने वंशीधर को अपना स्थाई मैनेजर बना लिया। इससे प्रमाणित होता कि पंडित आलोपीदीन सच्चे पारखी थे।

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) इस पाठ के लेखक कौन है ?

उ॰ इस पाठ यानी "नमक का दारोगा" के लेखक मुंशी प्रेमचंद ।

(2) पिता ने अपने पुत्र को नौकरी पाने से पहले क्या उपदेश दिए थे ?

उ॰ उपदेश दिया था। उनका कहना था कि नौकरी जैसी भी हो, ऊपरी आय जरूर होनी चाहिए, महीने का वेतन पूर्णमासी की चाँद तरह एक दिन देगा और धीरे धीरे घटकर शायद हो जाएगा ऊपरी आय एक बहती धारा है जिसे हमेशा प्यास बुझाई जा सकती है।

(3) "लक्ष्मी पर अखंड विश्वास" होने का क्या अर्थ है ?

उ॰ "लक्ष्मी पर अखंड विश्वास"

होने का अर्थ है संसार का हर एक कार्य पैसे के बल पर किया जा सकता है। पंडित आलोपीदीन ऐसे ही व्यक्ति थे जो लक्ष्मी पर अखंड विश्वास करते थे। उनकी इस अस्त्र के आगे सिर्फ वंशीधर ही टहर सके।

(4) अदालत में जाते वक्त आलोपीदीन की हालत कैसी थी?

उ० अदालत में जाते वक्त आलोपीदीन की हालत कुछ इस प्रकार थी कि उसके हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे लज्जा से गरदन झुकाए हुए थे।

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) "ईश्वर निस्संतान चाहे रखे पर ऐसी संतान न दे", वाहे मुंशी जी यह क्यों कहा, और किसे कहा?

(उ०)

उ० "ईश्वर निस्संतान चाहे रखे पर ऐसी संतान न दे" — बूढ़े मुंशी जी ने अलोपीदीन से कहा। उन्होंने ऐसा ~~इसलिए क्योंकि~~ वंशीधर के बारे में इसलिए कहा था क्योंकि अलोपीदीन नमक के केस में जीत गए थे जिसके कारण ~~मुंशी~~ वंशीधर और उनके पिता शर्म से पानी पानी ~~हो गए~~ हो गए थे। इसलिए उन्होंने यह कथन अलोपीदीन से कहा।

(2) "मुझे अयोग्य आदमी चाहिए" ऐसा अलोपीदीन ने क्यों कहा? अपने विचार के अनुसार लिखि

उ० अलोपीदीन नमक के व्यापारी थे, वह गलत तरीके से नमक का व्यापार करते थे वह नहीं चाहते थे कि नमक व्यापार में उसका कोई विरोध करे। इसलिए वह सभी लोगों को रिश्वत देकर उनका मुँह बंद कर देते थे इसलिए अलोपीदीन को एक अयोग्य की ज़रूरत थी।

(3) अलोपीदीन और वंशीधर में से आपको कौन-सा पात्र अच्छा लगा और क्यों?

उ० वंशीधर ईमानदार एक ईमानदार दारोगा थे, और योग्य नमक के दारोगा थे। उनमें ईमानदारी कूट-कूट कर भरी थी। वह एक बार पंडित अलोपीदीन की नमक से भरा गाड़ी को पकड़ लिए थे, पंडित अलोपीदीन चोरी-चुपके नमक का व्यापार किया करते थे। उन्हें हजारों की रिश्वत मिलने के बावजूद वंशीधर ने रिश्वत नहीं ली। अतः वंशीधर कर्मठ और ईमानदार व्यक्ति थे। अतः पंडित अलोपीदीन और वंशीधर में वंशीधर का पात्र अच्छा लगा।